धेवधा विकास समिति की विचारधारा

धेवधा विकास समिति एक समर्पित, गैर-राजनीतिक और जनहितैषी संगठन है, जिसकी विचारधारा निम्नलिखित मूल सिद्धांतों पर आधारित है:

1. सामाजिक समरसता और एकता

समिति का उद्देश्य गांव के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना है, ताकि सामाजिक समरसता बनी रहे और सामूहिक प्रयासों से गांव का सर्वांगीण विकास हो सके।

2. शिक्षा और नैतिक मूल्यों का संवर्धन

समिति शिक्षा को गांव के विकास की रीढ़ मानती है। बच्चों की स्कूल में उपस्थिति, ट्यूशन की व्यवस्था, शिक्षकों से संवाद और डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना जैसे प्रयास इसी दिशा में हैं।

3. आधारभूत संरचना का विकास

गांव की सड़क, नाली, स्वागत द्वार, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं के सुधार और निर्माण के लिए समिति लगातार प्रयासरत है। यह कार्य पारदर्शिता और जनसहयोग के साथ किया जाता है।

4. सांस्कृतिक पुनर्जागरण

समिति का मानना है कि गांव की सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करना आवश्यक है। 'राष्ट्रीय नाट्य कला परिषद' का पुनर्गठन, 'डोमरा-डुमरी का नाच', देवी जागरण, और सांस्कृतिक संध्या जैसे आयोजन इसी सोच का हिस्सा हैं।

5. जन-जागरूकता और अनुशासन

समिति गांव में अनुशासन, स्वच्छता, और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है। इसके लिए जनजागरूकता अभियान, सामूहिक बैठकें और निगरानी समितियाँ गठित की जाती हैं।

6. युवाओं की भागीदारी और नेतृत्व

समिति की यूएसपी गांव के नवयुवक हैं। उन्हें नेतृत्व में लाकर गांव के भविष्य को सशक्त बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

7. पारदर्शिता और जवाबदेही

हर कार्य में पारदर्शिता, बजट की सार्वजनिक जानकारी, और सामूहिक निर्णय प्रक्रिया समिति की पहचान है।

धेवधा विकास समिति का यह दृष्टिकोण गांव को आत्मनिर्भर, सशक्त और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है। यह विचारधारा न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणा है।